© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS
ISSN: 2348 - 5612
https://urr.shodhsagar.com

SHODH SAGAR
International Publications

Original Article	Refereed & Peer Reviewed	Vol. 11, Issue: 01	Jan – Mar 2024

विरह का इन्द्रधनुष में स्त्री विमर्श एवं संघर्ष

पीएच.डी. शोधार्थी – प्रोमिला

How to cite:
प्रोमिला (2024). विरह का इन्द्रधनुष में स्त्री विमर्श एवं संघर्ष 11(1), 53-59. *Universal Research Reports, 11(1), 65-73.*

सारांष

कैलाश चन्द्र शर्मा एक संवेदनशील रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को अपनी रचनाओं में समेटने का प्रयास किया है। विरह का इन्द्रधनुष" एक उनकी एक औपन्यासिक कृति है जिसके माध्यम से लेखक ने मध्यवर्गीय परिवार के जीवन–संघर्ष को बड़ी गम्भीरता के साथ दिखाया है।

लेखक की मान्यता है कि, "यह कथा नहीं है अपितु जीवन की यथार्थता का दर्पण है जिसमें मानवीय भावनाओं को उकेरा गया है।" **1**

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक स्वीकार करता है कि विरह मनुष्य को लाचार व पंगु नहीं बनाता अपितु उसमें ऊर्जा और ऊष्मा का संचार करता है। इस विछोह की स्मृतियां मनुष्य को आगे बढने का एक ठोस आधार प्रदान करती हैं और शायद इसीलिए मनुष्य अपने जीवन की धरोहर मानते हुए इन्हें सुरक्षित रखना चाहता है.

मुख्य शब्द

स्त्री विमर्श, सामाजिक यथार्थ, पीड़ा की अभिव्यक्ति, व्यक्ति का मनोबल, जीवन की यथार्थता, नारी–पीड़ा की अभिव्यक्ति, विरह का इन्द्रधनुष

विरह का इन्द्रधनुष में स्त्री विमर्श एवं संघर्ष

यह उपन्यास जहां एक ओर नारी की आंतरिक दशा को व्यक्त करता है तो दूसरी ओर इसमें व्यक्ति का मानसिक एवं सामाजिक द्वन्द्व है, पर इन सबसे बढ़कर है लेखक का सामाजिक रूढ़ियों एवं बन्दिशों को बड़ी सच्चाई के साथ स्वीकार करना और उनसे जूझने के लिए व्यक्ति का मनोबल जुटाते हुए दिखाई देना।

देखा जाए तो "अभिव्यक्ति" एवं "विरह का इन्द्रधनुष" दोनों उपन्यासों को मिलाकर साहित्य का एक महावृत्त पूरा हो जाता है। वैसे इन दोनों उपन्यासों का आरम्भ बिन्दु भी समय की दृष्टि से एक ही है। नाम चाहे वे पात्रों के हों या स्थानों के, थोडे उलट–पुलट के साथ वे एक जैसे ही हैं।

"अभिव्यक्ति" की मंजरी, "विरह का इन्द्रधनुष" की सरला एवं दोनों ही उपन्यासों की सरला, इनमें किसी भी प्रकार का अन्तर नहीं है। एक पूरे रचाव का नाम है सरला जिसके इर्द–गिर्द इन उपन्यासों का जाल बुना गया है। अभिव्यक्ति प्रारिम्भक अवस्थाकाल है और विरह इन्द्रधनुष उसका विकास, परन्तु इनमें अन्त कहीं नहीं है। अभिव्यक्ति में विश्वास को सरला मिल जाती है। उपन्यासकार ने इसे नायक–नायिका का मिलन बताया है परन्तु वास्तव में यह प्रेम के रंग में रंगे दो प्रेमियों के मिलन का विस्वास है जिसके जादुई मोहबन्ध में पक्षकारों को अपने प्रेमी से मिलने की भ्रान्ति होती है। ऐसा नहीं होता तो विरह का इन्द्रधनुष उपन्यास का सृजन ही नहीं हो पाता। सत्य तो यह है कि विस्वास को उसकी सरला मिली ही नहीं। तभी तो विस्वास ने निर्मल का आवरण ओढ़कर विरह का इन्द्रधनुष के विभिन्न पात्रों के मध्य अपनी सरला को तलाशना प्रारम्भ किया और उसे आगे चलकर रोनू में उसका प्रतिरूप दिखलायी दिया। पर क्या उसे सरला मिल सकी? यह एक अन्तहीन यात्रा है विस्वास की, उसके जन्म–जन्मान्तरों की कहानी। सरला एवं विस्वास की आत्माओं की मिलन हेतु छटपटाहट है यह। यही कैलाशचन्द्र शर्मा जी की रचनाधर्मिता है और उनके लेखन की विशिष्टता भी जो उन्हें अन्य उपन्यासकारों से अलग पंक्ति में ले जा खड़ा करती है जीवन के यथार्थ का चित्रण करने वाले एक सुयोग्य शिल्पकार के रूप में पात्रों ही उपन्यासों में ऐतिहासिकता का भी चित्रण है जिसमें पात्रों

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

की भूमिका का अन्त भी होता है परन्तु उसका स्थान नये पात्र ले लेते हैं। परन्तु विस्वास, निर्मल तथा सरला ऐसे पात्र है जो अन्तहीन है और एक–दूसरे से गुंथे रहते हैं। इन पात्रों एवं उनके समय को ही कैलाश जी ने अपने उपन्यासों के कथन के लिए चुना है। दोनों ही उपन्यासों के विभिन्न पात्रों पर आधुनिकता का प्रभाव भी है जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य आत्मकेन्द्रित हो जाता है। वह विभाजित हो जाता है। तब इस विभाजन और विभाजित दृष्टि से कई–कई समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। जैसे–जैसे आधुनिकता का प्रभाव गहरा होता जाता है, समस्याएँ विकराल होती जाती है। संघर्ष तीव्रतर हो जाते हैं और समाज में कई–कई परिवर्तन हो जाते हैं। तब उपन्यास का कथा–प्रवाह इन सबको साथ लेकर घटित का बखान करते हुए आगे बढ़ता है।

कैलाश जी के दोनों ही उपन्यासों की पृष्ठभूमि राजस्थान का ढूंढाड़ रहा है परन्तु अपने गाँव के प्रति आसक्ति होते हुए भी उन्होंने आज के मैड़–विराट अँचल को उपन्यास का विषय नहीं बनाया है क्योंकि आज के ढूंढाड़ में वह परिचित गन्ध नहीं है। स्वयं कैलाश जी के ही शब्दों में –"मैं अपने जन्म स्थान की यादें एवं विद्यार्थी जीवन की घटनाओं को अपने अन्तर मे समाये लगभग तीस वर्ष तक वहाँ से दूर रहा और इस अवधि में मैंने साहित्य की विभिन्न विधाओं के माध्यम से इन स्मृतियों को जीवित रखा। इस प्रकार स्वतः ही साहित्य–सृजन हो गया। परन्तु एक दीर्घकालखण्ड के उपरान्त जब दृष्टि उठाकर देखा तो मेरा जन्म स्थान बदल सा गया था। मेरी स्मृतियां छिन्न–भिन्न सी होती प्रतीत हुई। न यहाँ पर पुराने लोग रहे थे, न वह सोच, प्रेम, अपनत्वपन और एक–दूसरे में समर्पण की भावना। मेरे साहित्य के पात्र एक–एक करके इस दुनियां से प्रस्थान कर गये थे।"**1**

"श्योलाल के चबूतरे एवं उनकी छतरी का नामोनिशान न था। उस स्थान पर सड़क के किनारे एक छोटी सी मूर्ति जमीन में धंसी एक–दो हाथ का कपड़ा ओढ़े अपने भाग्य को कोस रही थी। मुझे तो तब ही पता लगा कि उस चबूतरे में कोई मूर्ति भी थी। बचपन में मैं उस चबूतरे के पास अधिक देर न रुका था पर आज वहाँ खड़ा–खडा सोच रहा था कि श्योलाल कौन था? पर कौन बताये। आज तो लोगों को यह भी पता न था कि वहाँ कभी कोई चबूतरा भी था। बोडी की ढाणी के कच्चे घरों के स्थान पर पक्के मकान बन गये थे। परन्तु मन को ठेस पहुँची यह सब देखकर। जब मैं स्कूल जाने हेतु इधर से गुजरता था तो वहाँ कच्चे घरों के सामने सड़क के किनारे एक भूरा कुत्ता बैठा रहता और मैं डर के मारे अपनी चाल धीमी करे एवं कनखियों से कुत्ते को देखते हुए सड़क पार करने लगता। पर आज ये सब खो गये थे। यदि इस स्थान पर मैं एक–दो दशक पहले आ जाता तो मिट्टी के कच्चे घड़े में बन्द स्मृतियाँ आधुनिकता एवं विकास की ठेस लगते ही घड़े को तोड़ देती और तब क्या यह साहित्य–सर्जना हो पाती?
कभी नहीं।" **2**

उपन्यास के केन्द्र में विभिन्न पात्र हैं जो जीवन में संघर्ष करते हुए आशावादी दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं न कि निराशा के अन्धकार में जीना उन्हें स्वीकार्य है। मुख्य रूप से कथा विश्वास के इर्द गिर्द घूमती है। लेखक के शब्दों में–"मेरी इस कृति की नियोजना छह खण्डों में की गई है परन्तु कथा का प्रवाह खण्डों में बंधकर रह पाना संभव नहीं शायद, क्योंकि इनमें केवल शब्द ही नहीं विभिन्न पात्रों की भावनाएँ समाहित हैं। इनका शिल्प श्री नरेश मेहता के उपन्यास "धूमकेतुः एक श्रुति" से मिलता जुलता है जिसके सम्बन्ध में थोड़ा स्पष्टीकरण आवश्यक है। एक तो यह कि इसमें प्रथम पुरुष शैली प्रयुक्त हुई है। जीवनी का भ्रम हो सकता है परन्तु यह उपन्यास है। "मैं" व्यक्ति है लेखक नहीं । भावनाओं की तीव्रता के लिए यह शैली अपनाई गई है। मुझे विश्वास है कि इससे आपको राग – बोध में अपनत्वपन का अनुभव होगा।" **3**

इस उपन्यास के माध्यम से लेखक यह स्वीकार करता है कि मनुष्य के जीवन की बाधाएँ और संघर्ष उसको लाचार और पंगु नहीं बनाते अपितु उसमें ऊर्जा और ऊष्मा का संचार करते हैं और अपनों से इस विछोह की ये स्मृतियों उसे आगे बढने को प्रेरित करती हैं और शायद इसीलिए मनुष्य इन्हें अपने अतीत की धरोह मानते हुए सुरक्षित रखना चाहता है।

उपन्यास का कलेवर आधुनिक मध्यवर्गीय समाज के लागों का जीवन है जो आर्थिक विषमता में छटपटाता है और उस जीवन–संघर्ष से जूझता हुआ आगे बढ़ने की चाह लिए हुए है जिसमें वह सफल भी रहता है । सभी पात्र मध्यवर्गीय एवं निम्न मध्यवर्गीय हैं और वे व्यक्तिगत जीवन की समस्याएं कठिनाइयाँ लेकर प्रस्तुत हुए हैं। उनके सामने आर्थिक कठिनाई बनी रहती है परन्तु जीवन में वे इनसे संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते हैं। जहाँ उपन्यासकार ने अपने

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

इस उपन्यास में विश्वास और अन्य पात्रों के माध्यम से युवा वर्ग के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है वहीं नारी जीवन में व्याप्त संघर्ष का चित्रण भी बड़ी मार्मिकता से किया है । उपन्यास में एक नारी वह है जो विधवा है और अपने परिवार के भरण–पोषण हेतु जीवन में संघर्ष करती है तो दूसरी ओर वह नारी है जो अपने ही विभाग के अधिकारियों की लोलुपवृत्ति से तंग आकर नौकरी से त्यागपत्र देकर अपनी इच्छानुसार जीवन जीते हुए अपना जीवन संगीत को समर्पित कर देती है।

परन्तु इसमें उपन्यासकार उस नारी का भी चित्रण करता है जो आर्थिक विषमता से जूझते हुए जीवन भर समझौता करते हुए जीती है। विरह का इन्द्रधनुष उपन्यास में चित्रित मध्यवर्गीय विधवा नारी के जीवन से यह स्पष्ट है कि अब केवल वही विधवा नारी स्वयं को असहाय समझती है जो शिक्षित नहीं, जिसमें समाज में खड़े होने के लिए आत्मविश्वास नहीं।

उपन्यास में योगेश की मृत्यु के उपरान्त उसकी पत्नी को ससुराल में प्रताडित किया जाता है जिसको लेखक ने बड़ी मार्मिकता से उपन्यास में उकेरा है – "योगेश का निधन होने के लगभग दो माह पश्चात् ही उसकी माँ ने अपनी इस विधवा पुत्रवधू को अपशकुनी मानते हुए घर से अलग कर दिया और उस पर तरह तरह से अत्याचार करने शुरू कर दिये। उसे घर से बाहर निकलने या किसी बाहरी व्यक्ति से बात करने के प्रति प्रतिबन्धित कर दिया गया यहाँ तक कि झरोखे की सभी खिड़कियों को बन्द करके उन पर इसलिए ताले लगा दिये गये तांकि भाभी बाहर के किसी भी व्यक्ति से बात न कर सके । " **4**

वह बेचारी अपने दोनों बच्चों का पालन पोषण करने हेतु आस–पास की औरतों के कपड़ों की सिलाई किया करती परन्तु वह भी घर के अन्दर ही, ऐसे में उसके पिताजी पुत्री का हौसला बढाते। वह पिता के सहयोग से दसवीं कक्षा का प्राइवेट फार्म भरती है, परंतु जब इसका पता उसकी सास को चलता है तो वह आसमान सिर पर उठा लेती है और उस पर लांछन लगाते हुए कहती है–" राण्ड पहले तो मेरे बेटे को खा गई और अब चली है खसम करने।" **5**

परन्तु यह विधवा हार नहीं मानते, पिता की प्रेरणा और अपने बच्चों के भविष्य की चिन्ता करके सब सहती है। दिन में सिलाई करती और रात में पढ़ाई। नीचता की पराकाष्ठा को साकार करते हुए सास ने उसके कमरे की बिजली यह कहते हुए कटवा दी कि अब देख रण्डी तुझे कैसे कराती हूँ, बी.ए. पास ।

परन्तु योगेश की पत्नी अपना विश्वास डगमगाने नहीं देती अपितु संस्कृत के अपने मुंहबोले भाई से कहती है– "पेट भरने के लिए सिलाई तथा जीवन में आगे बढ़ने के लिए पढाई करती रही।" **6**

भारतीय समाज में विधवा की स्थिति बडी ही संकटपूर्ण रहती है। ग्रामीण जीवन में विधवा को अभिशप्त जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है । पुनर्विवाह की अनुमति नहीं होने के कारण समाज में विधवाओं को उपेक्षित एवं तिरस्कृत जीवन जीने के लिए बाध्य होना पड़ता है। दैहिक एवं भौतिक दोनों ही प्रकार के कल्याण के लिए वह पुरुष पर निर्भर रहती है। भारतीय समाज की यह विडम्बना है कि पुरुष चाहे कितने ही विवाह कर सकता है किन्तु स्त्री के लिए दूसरा विवाह अनैतिक माना गया है। विधवाओं की दुःखी स्थिति का मुख्य कारण यही है कि यदि वे पुनर्विवाह कर भी लेती थी तो समाज उन्हें बहिष्कृत कर देता था। विवेच्य कृति में लेखक ने विधवा स्त्री की विवशतापूर्ण स्थिति का यथार्थ चित्रण किया है।

उपन्यास में सुप्यार नामक एक विधवा के भग्गू से संबंध को लेकर कहानी का नायक परेशान हो जाता है। अपने परम मित्र योगेश की पत्नी के संबंध में भी वह यही सोचने लगता है कि मेरे बालसखा योगेश की पत्नी भी तो सुप्यार की ही तरह विधवा हो गई थी। हो सकता है वह भी उसकी ही तरह किसी भग्गू के चंगुल में फँस गई हो। परंतु क्या यह फँसना था या उसकी विवशता ?

विवशता किसी भी प्रकार की हो सकती है मनुष्य के सामने, और विवश हो जाना व्यक्ति विशेष की परिस्थिति पर निर्भर करता है ।

लेखक ने उपन्यास में नायक के मित्र योगेश की पत्नी को शिक्षा प्राप्ति के लिए संघर्षरत दिखाया है–"मंजू मौसी भी तो गरीब घर की ही थी जिससे जीवन भर अनैतिक सम्बन्ध बनाये रखने के उद्देश्य से उसके बहनोई ने उसका विवाह धनाढ्य परिवार के एक अर्धविक्षिप्त युवक से करवा दिया था। ससुराल में भी उसके देवर उससे अनैतिक सम्बन्ध बनाये रखना चाहते थे क्योंकि वह एक गरीब बाप की बेटी एवं तथाकथित पागल की पत्नी थी।" **7**

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

नायक आगे बताता है– "मैंने मौसी के रूप में जब अपनी सरला को चक्रव्यूह में फंसा देखा तो उसे बाहर निकलने का रास्ता भी सुझाया था और वह मेरी बात मानकर अपन एवं पुत्र को लेकर अपने संयुक्त परिवार से अलग भी हो गई थी परन्तु कुछ समय पता नहीं क्या हुआ और वह अपने पति एवं बेटे को साथ लेकर अपने विधुर नन्दोई के साथ जाकर रहने लगी ।

यहां उसके देवरों का स्थान उसके नन्दोई ने ले लिया था । जब नायक को घटनाक्रम का पता चला तो उसका मन पीड़ा से कराह उठा और फिर वह अपनी सरला के लिये कुछ न कर सका ।" **8**

विश्वास ने भाभी की वर्तमान स्थिति के बारे में खोजबीन की तो पता चला कि उसकी छोटी बहन का विवाह हो गया था परन्तु कालान्तर में उसके दो छोटे–छोटे बच्चों को छोडकर इसका पति आकस्मिक दुर्घटना में चल बसा था और उसकी बहन मजदूरी करके, पहाडी पर पत्थर तोड़ने का कार्य करके अपने बच्चों का भरण पोषण कर रही है।

विधवा नारी की दुर्दशा– समाज में विधवा की दशा सदा से शोचनीय रही है और आज भी अमूनन यही स्थिति है। समाज में एक विधवा को अपने पति की मौत का दोषी माना जाता है उसे अपशकुनी माना जाता है, उससे मारपीट और गाली गलौच की जाती है, यहाँ तक कि उसे घर से भी निकाल दिया जाता है। समाज की कुत्सित एवं बुरी नजर सदैव उस पर लगी रहती है। उसका अनेक तरह से शोषण किया जाता है ।

विवेच्य उपन्यास में भी विधवा की दुर्दशा को अनेक घटनाओं एवं उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट किया गया है .

इस उपन्यास में रोनू नामक एक विद्रोही नारी पुलिस अधिकारी पात्र है जो अपने ही विभाग की गतिविधियों से त्रस्त है। वह बताती है कि उसके विभाग के बड़े–बड़े अधिकारी प्रत्यक्ष में तो अपने आपको अपराधियों को पकड़ने में संलग्न दर्शाते हैं परन्तु वास्तव में वे स्वयं एक ऐसे छद्मवेशी भेड़िये हैं जो अपराधों में लिप्त हैं और बेबस महिलाओं तक को नोच–नोचकर अपने घिनौने कार्यों में आनन्द की अनुभूति करते हैं । रोनू अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए विश्वास से कहती है– "सर मेरे ही विभाग में मुझ पर अत्याचार किये गये । मेरे उच्चाधिकारियों द्वारा मुझे बदनीयती से देखा गया परन्तु मैंने साहस के साथ उन दरिन्दों का मुकाबला किया जिससे क्रुद्ध होकर उन्होंने मुझ पर मनगढ़ंत आरोप लगाये और असमय ही जगह जगह मेरे तबादले होते रहे । एक–दो बार तो मुझे नौकरी से निलम्बित भी किया गया।" **9**

परन्तु यही रोनू परिस्थितियों के आगे झुकती नहीं निरन्तर संघर्ष करती है। अत्याचारियों से घिरी यह युवती कला एवं संस्कृति के प्रति अभिरुचि रखती है और नौकरी से इस्तीफा देकर सरस्वती "सरस्वति शिक्षण संस्थान" को सम्भालने हेतु अपना जीवन अर्पित करती है जिसकी पुष्टि विश्वास इस प्रकार करता है –"वह अपनी नौकरी से इस्तीफा देकर चली गई बालेश्वर की पहाड़ियों के मध्य स्थित मेरे "सरस्वती शिक्षण संस्थान" को संभालने । " **10**

इस प्रकार स्पष्ट है कि उपन्यास में विभिन्न पात्रों के माध्यम से लेखक ने उनके जीवन संघर्ष का चित्रण बड़ी सजीवता से किया है। उपन्यास में जहाँ गंभीर वैचारिक भाव हैं, पलायन है वहीं विपरीत परिस्थितियों में गहरे आत्मविश्वास का भाव भी है। उपन्यास इस कलेवर में इस संदेश को समेटे हुए है कि बढ़ना ही जीवन है और मनुष्य को जीवन के अन्तिम क्षणों तक आगे बढ़ने हेतु प्रयासरत रहना चाहिए।

उपर्युक्त विवेचन के आलोक में हम कह सकते हैं कि कैलाशचन्द्र शर्मा जी विरचित "विरह का इन्द्रधनुष" न केवल मानवीय वेदना और संवेदना की प्रबल अभिव्यक्ति है अपितु सामाजिक समस्याओं से जूझने वाले अनेक पात्रों के द्वन्द्व की मार्मिक गाथा भी है। कथा व्यथा के साँचे में ढलकर पाठक तक पहुँची है। सहज, सरल, सुबोध शैली में रचे गये इस उपन्यास का गम्भीर प्रभाव पाठक को देर तक सोचने के लिए विवश करेगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 'संपादक रीना कुमारी, कैलाशचन्द्र शर्मा का बहुआयामी सृजन, पृष्ठ 109

2 कैलाशचन्द्र शर्मा, कुछ–कुछ यादें, पृष्ठ 21–33

3 कैलाशचन्द्र शर्मा, कुछ–कुछ यादें, पृष्ठ 14–15

4 ————————————वही———— पृष्ठ 19

5 कैलाशचन्द्र शर्मा, कुछ–कुछ यादें, पृष्ठ 22

6 ————————————वही———— पृष्ठ 32

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/

7 'संपादक रेणुका इसरानी, कर्मपथ– कै.लाशचन्द्र शर्मा का बहुआयामी सुजन, पृष्ठ 247

8 'संपादक, रीना कुमारी, कैलाशचन्द्र शर्मा का बहुआयामी सृजन, पृष्ठ 89

9 ' कैलाशचन्द्र शर्मा, विरह का इन्द्रधनुष, पृष्ठ 107

10 'कैलाशचन्द्र शर्मा, विरह का इन्द्रधनुष, पृष्ठ 112

❑❑❑

❑❑❑

This Article is published under CC BY 4.0 License and is available online in full Open Access on https://urr.shodhsagar.com/